AI का सामाजिक प्रभाव एवम् चुनौती

रमेश कुमार भोजक, शोधार्थी, समाजशास्त्र, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

सार संक्षेप

AI बुद्धिमान मशीन और सॉफ्टवेयर बनाने का विज्ञान है जो आमतौर पर मानव बुद्धि से जुड़े कार्य को आसानी से कर सकता है जैसे की समस्या सुलझाना सीखना कठिन सवालों के उत्तर देना और किसी भी तरह का निर्णय लेना लिखना इत्यादि। यदि हम आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की दुनिया को गहराई से समझना और जानना चाहते हैं तो हमें इस परिवर्तनकारी शक्ति को समझना अति आवश्यक है AI सिस्टम में हमारे जीवन को अनगिनत तरीकों से उन्नत करने की क्षमता है। यह स्वास्थ्य देखभाल के परिणाम में सुधार से लेकर परिवहन प्रणालियों को सुव्यवस्थित से करने और अपने छोटे-मोटे अनुभवों को अमल में लाने तक की असीमित संभावनाएं रखता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जनक जॉन मैकार्थी है। भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जाना के प्रोफेसर राज रेडी है जो कंप्यूटर वैज्ञानिक और प्रोफेसर है जिन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है रेडी को कंप्यूटर विज्ञान और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में उनके काम के लिए वर्ष 1994 में टूरिंग पुरस्कार मिला था। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अर्थ है कृत्रिम तरीके से विकसित बौद्धिक क्षमता इसके द्वारा कंप्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है जिसे उन्हें तर्क संगतता के आधार पर संचालित करने का प्रयास किया जाता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग से शक्ति के साथ ही बड़ी जिम्मेदारी भी आती है और हमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को व्यापक स्तर पर अपनाने से उत्पन्न होने वाले नैतिक निहितार्थों और संभावित चुनौतियों पर और अधिक विचार करने की आवश्यकता है। उन्नत प्रकार के एल्गोरिथम मशीन लर्निंग और तंत्रिका नेटवर्क के विकास के माध्यम से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिस्टम बड़ी मात्रा में डेटा विश्लेषण में आकलन बहुत तेजी से कर सकते हैं साथ ही नए पैटर्न की पहचान कर सकते हैं जिसमें हम बड़ी सरलता और कुशलता के साथ त्वरित और सटीक निर्णय ले सकते हैं।